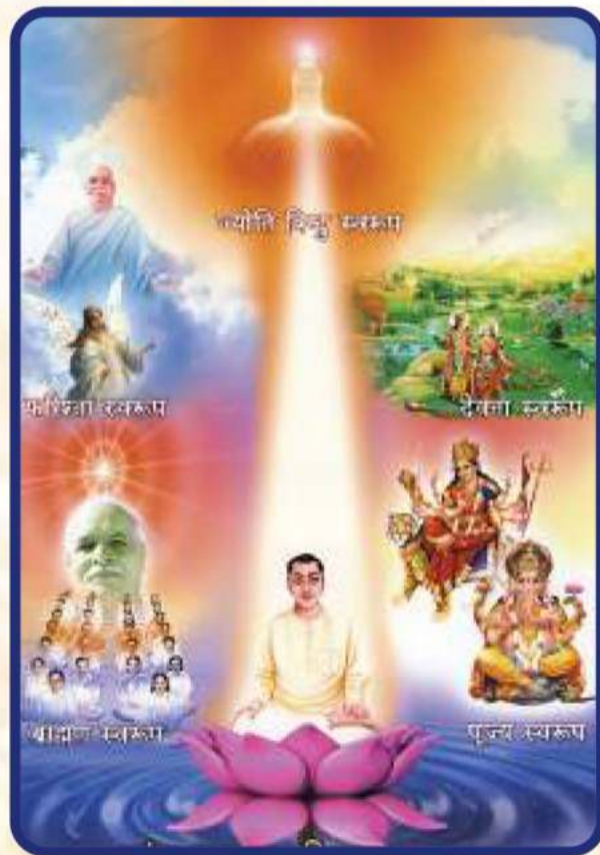


पाँच स्वरूपों से पाँच युग सुरक्षित

आध्यात्मिकता में ताकत लाने के लिए हम सभी को परमात्मा ने अलग-अलग अभ्यास बताया है। लेकिन सारे अभ्यास में एक बहुत बड़ा विज्ञान छुपा हुआ है। माना कि ये सारी चीजें समझ में देर से आई हैं लेकिन इसका राज इतना गहरा है जिससे युगों तक हमारे जीवन में परिवर्तन रह सकता है। जैसे कभी अच्छा बना नहीं जाता है, हम अच्छे ही हैं, क्योंकि जो चीज बनाई जाती है वो तो बिगड़ जायेगी। इसीलिए हम अच्छे ही हैं, बस उसको थोड़ा-सा तराशने की आवश्यकता है। और ऐसा तराशा जाए जो हमेशा, हर युग में चमकता रहे।

जब कभी कोर्स हम करते हैं तो उसमें वर्ल्ड साइकल को एक भौगोलिक (ज्योग्राफिकल) तरीके से समझाया जाता है कि भारत ऐसा था, फिर ऐसा बना, फिर ऐसा बन गया, समय के परिवर्तन के आधार से। लेकिन भारत नहीं ऐसा बना, भारत में रहने वाले लोगों के विचारों के अंदर ऐसा परिवर्तन आया तो लोग ऐसे बने, तो भारत भी ऐसा बन गया। इसलिए ये समझना अति आवश्यक है कि पाँच स्वरूप का अभ्यास परमात्मा ने हमको बताया लेकिन ये पाँचों स्वरूप हर युग को अपने साथ जोड़ते हैं। हर युग इन पाँचों स्वरूपों से जुड़ा हुआ है।



पहला स्वरूप : हम जब सतयुग में थे, जिसमें कहा जाता है कि हमारी कंचन काया होती है। हम सारे रोग मुक्त होते हैं, निरोगी होते हैं। और ये निरोग्य अवस्था डेढ़ सौ साल तक चलती है। इस अवस्था में हम आये कैसे होंगे, इसको समझते हैं। जैसे कभी आप आईने के सामने जाते हो तो वहाँ पर क्या सोचते हो? यही ना कि मेरी आँखें कैसी लग रही हैं, मेरा चेहरा कैसा लग रहा है, मेरा शरीर कैसा दिख रहा है। अब देखो क्या है, जो ये देख रही है, उसी को तो हम आत्मा कहते हैं। जो देख रही है इन आँखों द्वारा सारी चीजों को और संकल्प भी आत्मा ही के अंदर चल रहे हैं, इसका मतलब शरीर भी आत्मा के अंदर ही है, जैसा वो सोच रही है वैसा उसका स्थूल शरीर दिख रहा है। तो परमात्मा ने हमें बताया कि अब आपको शरीर के कॉन्शियसनेस से नहीं जीना है, आत्मा के कॉन्शियसनेस से जीना है। माना हमें याद रहने

लग जाये कि मैं आत्मा एक कंचन काया वाली थी, निरोगी काया वाली थी, सूक्ष्म काया वाली थी, तो ऑटोमेटिकली हमारी आत्मा के अंदर वो बल आता जायेगा, वो सारे संकल्प चलने लग जायेंगे और वैसा ही स्थूल शरीर डेवलप होना शुरू हो जायेगा। ये कोई कोरी कल्पना नहीं है, लेकिन ये सत्य है। इसलिए यहाँ पर बार-बार कहा जाता है कि आपको आत्मिक स्थिति का अभ्यास करना है, लेकिन आत्मिक स्थिति के अभ्यास में ये सारी चीजें शामिल हैं। तो जितना हम आत्मिक स्वरूप या

तीसरा स्वरूप : पूज्य स्वरूप का अभ्यास जब हम अधिक से अधिक करते हैं तो हमारा भावनात्मक मन अति शक्तिशाली होता चला जाता है। कहा जाता है कि कोई देवी-देवता किसी के यज्ञ-तप से प्रकट होते थे तो उस समय वो सामने वाला व्यक्ति उन्हें देखकर बहुत भावविभोर हो जाता और रोने लगता, उस समय ऐसा नहीं कि देवता भी उसे देखकर रोने लग जायें। लेकिन जब हम किसी को क्लास, कोर्स देते हैं तो हम सभी भावनात्मक रूप से इतने कमजोर हो जाते कि हम भी उन्हें देखकर वैसा ही स्वरूप बना लेते हैं। लेकिन हमें ज्ञात हो कि सभी अपने कर्मों के आधार से भावुक हो रहे हैं, दुःखी हो रहे हैं, तो हम क्यों उन्हें देखकर कमजोर फील करें! इसलिए जितना अधिक से अधिक हम अपने पूज्य स्वरूप का अभ्यास करेंगे उतना हम इमोशनली स्ट्रॉन्ग होंगे।

चौथा स्वरूप : ब्राह्मण स्वरूप। कहावत है कि जब किसी ब्राह्मण का पैर किसी के घर में पड़ता है तो उस घर में पवित्रता आ जाती है। इसका अर्थ ये हुआ कि ब्राह्मण शुद्ध खान-पान वाला है, हमेशा संयमित जीवन जीने वाला है या परमात्मा की याद में रहने वाला है। इसलिए आप देखो, किसी भी कार्य की शुरुआत में ब्राह्मणों को बुलाया जाता है कि ये आयेगे तो हमारा कार्य सफल होगा, इसलिए ब्राह्मण सबसे ज्यादा शुभ हैं और सामाजिक हैं। इसलिए अगर हमें सामाजिक रूप से शक्तिशाली बनना है तो इस स्वरूप का अभ्यास करना है।

अनादि स्वरूप में रहेंगे, उतना हमारा स्थूल शरीर स्वस्थ और निरोगी बनेगा और जितने समय (लम्बे काल) तक रहेंगे उतने दिनों तक शरीर निरोगी और सुंदर रहेगा, कंचन काया रहेगी।

दूसरा स्वरूप : हमारा जो आदि स्वरूप है, जिसमें हम अपने आप को देवता के स्वरूप में बार-बार देखते हैं कि शुरू से हम मनुष्य थे जरूर लेकिन दिव्य गुणधारी थे और दिव्य गुणों की पराकाष्ठा इतनी ज्यादा थी कि हम सभी को कोई वजीर रखने की आवश्यकता नहीं थी। तो जितनी ज्यादा दिव्यता हमारे अंदर आयेगी उतनी हमारी विवेक शक्ति (विजडम) बढ़ जायेगी। तो अगर विवेक शक्ति को लम्बे काल तक रखना है तो हमें आदि स्वरूप का लम्बे काल तक अभ्यास करना है।

पाँचवा स्वरूप : हम सभी कहते हैं ना कि हम सबके लिए सुखदायी हों, सबके लिए अच्छा सोचें, सबके लिए प्रेम भाव रखें, सबके साथ अच्छा व्यवहार करें, सभी को जीवन में वो सबकुछ दें जो हम दे सकें, लेकिन भूल जायें देकर। ये काम फरिश्तों का होता है, जो देते हैं और भूल जाते हैं। इसलिए ज्यादा से ज्यादा जो फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास करता है कि मैं इस दुनिया से न्यारा हूँ, माना सब के लिए सोच सकता हूँ, सभी के लिए सुखदायी हूँ, सबको निर्विघ्न बनाने वाला हूँ क्योंकि फरिश्ते किसी को दुःखी नहीं करते, किसी के लिए विघ्न नहीं बनते, वो सभी के लिए सुखदायी होते हैं। इसलिए जो बहुत ज्यादा फरिश्ता स्वरूप में स्थित होगा वो सबसे ज्यादा निर्विघ्न बनायेगा। तो इन पाँचों स्वरूपों का अभ्यास इस तरह से समझ के करेंगे तो हमारे सभी युग सुरक्षित हो जायेंगे।

एक नई सोच

जीवन को दो ही तरीके से जिया जा सकता है, तपस्या सा बनाकर या तमाशा बनाकर। तपस्या का अर्थ जंगल में जाकर आँखें बंद करके बैठ जाना नहीं अपितु अपने दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को मुस्कुराकर सहने की क्षमता को विकसित कर लेना है। हिमालय पर जाकर देह को ठंडा करना तपस्या नहीं अपितु हिमालय सी शीतलता दिमाग में रखना जरूरी है। किसी के क्रोधपूर्ण वचनों को मुस्कुराकर सह लेना जिसे आ गया, सच, समझ लेना उसका जीवन तपस्या ही बन जाता है। छोटी-छोटी बातों पर जो क्रोध करता है निश्चित ही उसका जीवन एक तमाशा-सा बनकर ही रह जाता है। हर समय दिमाग गर्म रखकर रहना यह जीवन को तमाशा बनाना है। और दिमाग ठंडा रखना ही जीवन को तपस्या-सा बनाना है।



कुरवाई-म.प्र. ब्रह्माकुमारीज द्वारा शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए आयोजित मोटिवेशनल वर्कशॉप में ब्र.कु. जानकी बहन, ब्र.कु. रिया बहन तथा मोटिवेशनल राइटर पुष्पेन्द्र साहू ने विभिन्न विषयों पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। स्कूल की प्राचायों शाहीना खान एवं शिक्षकगण इस मौके पर उपस्थित रहे।



वाराणसी-उ.प्र. पावरग्रिड कॉर्पोरेशन उत्तरी क्षेत्र द्वारा वाराणसी के होटल क्लार्क्स में पावरग्रिड के मैनेजर्स और जनरल मैनेजर्स स्तरीय अधिकारियों के लिए आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला में ब्रह्माकुमारीज के राजयोग एवं मैनेजमेंट ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन तथा राजयोगी ब्र.कु. बिपिन भाई ने सभी को सुखी, स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने के टिप्स दिये। इस मौके पर पावर ग्रिड के वरिष्ठ महाप्रबंधक ए.के. राय, पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन, उत्तरी क्षेत्र के मानव संसाधन प्रभारी अशोक मिश्रा, लखनऊ के दिनेश पाण्डेय, कार्यक्रम प्रभारी विनोद जी, ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. खुशी, ब्र.कु. गंगाधर भाई, ईशान भाई आदि उपस्थित रहे।



जामखंडी-कर्नाटक. विश्व मृदा दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. शिवलीला, मल्लप्पा बुजरुखा, एग्रीकल्चर ऑफिसर, जामखंडी, ब्र.कु. शेखर तथा कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।



बी.जे.वी. नगर-भुवनेश्वर (ओडिशा). सूर्यक्षेत्र फाउण्डेशन ऑफ एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के वार्षिक उत्सव में 'जॉब सर्च सीक्रेट्स' नामक पुस्तक का विमोचन करते हुए मोहन चरण माझी, एम.एल.ए., ओडिशा लेजिस्लेटिव एसेम्बली, डॉ. बिपिन बिहारी मिश्रा, चेरमैन, राजयोगिनी ब्र.कु. तपस्विनी बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।